छह दशक पहले दिल्ली के भगीरथ पैलेस में स्कूल टीचर कीमत राय गुप्ता ने बिजली के सामान की दुकान शुरू की। समय के साथ उन्होंने इसे एक कंपनी में बदला, जो आज हेवल्स इंडिया के नाम से न केवल भारत की सबसे बड़ी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बनाने वाली कंपनी बन चुकी है, बल्कि विश्व के कई देशों में भी फैली है। कीमत राय के पुत्र अनिल राय गुप्ता इसके जरिए मल्टीनेशनल कंपनियों से भारत में कड़ा मुकाबला कर रहे हैं। अमर उजाला के अभिषेक यादव ने उनसे भारतीय अर्थव्यवस्था, उद्योगों और उत्पादों के विषय में बातचीत की :

भारतीय कंपनियों के लिए अच्छा समय, अवसर बढ़े

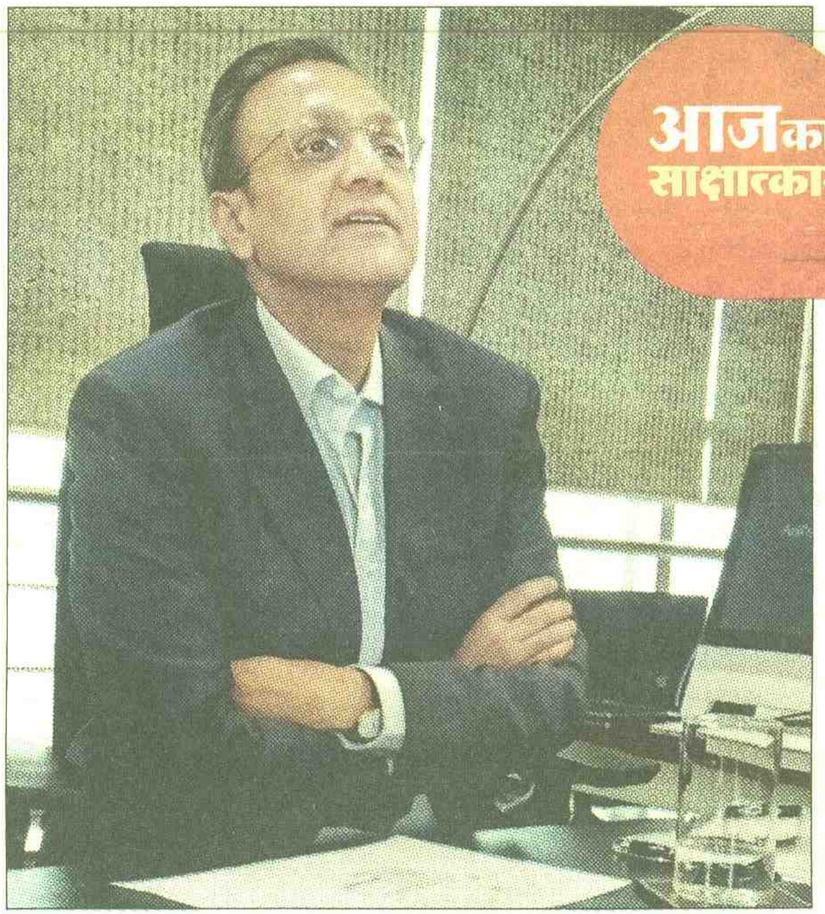

आज का साक्षात्कार

अनिल राय गुप्ता

हेवल्स ग्रुप, चेयरमैन व सीईओ

दावा... मल्टीनेशनल्स के सामने खड़े होने के लिए भारतीय कंपनियों के पास आज सबकुछ

नपा-तुला हो जोखिम

- थोड़े समय में मिली सफलता, थोड़े ही समय में खत्म हो जाती है
- पहचान बनाने के लिए प्रतिष्ठा बनानी होती है
- जोखिम हमेशा नपा-तुला होता है, पता होना चाहिए कि विफल हुए तो कितना नुकसान होगा
- सीखना बंद कर देंगे तो क्षमताएं खत्म हो जाएंगी
- उद्यमी में दो गुण जरूर हों- धैर्य और साहस

इलेक्ट्रॉनिक्स और होम अप्लायंसेस के क्षेत्र में एक भारतीय कंपनी को प्रतिष्ठित ब्रांड बनकर अंतरराष्ट्रीय कंपनियों से टक्कर लेने के लिए क्या तैयारियां करनी होती हैं?

कुछ अलग नहीं करना होता, लेकिन परिस्थितियां और अवसर मायने रखते हैं। आज भारतीय कंपनियों के लिए आगे बढ़ने के रास्ते में पुरानी बाधाएं लगातार कम हो रही हैं। बीते 15 वर्षों में कई मूल चुनौतियां खत्म हुई हैं, जैसे आज बाजार में पूंजी है, उत्पादन में क्वालिटी है, तकनीक के शोध और विकास (आरएंडडी) में निवेश हो रहा है। इससे हमें अंतरराष्ट्रीय ब्रांड्स के सामने खड़ा होने में मदद मिल रही है।

अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि का अनुमान घटा रही हैं, दूसरी ओर कई भारतीय व विदेशी कंपनियां भारत में अपना काम बढ़ा भी रही हैं, आपके अनुभव में क्या ऐसा करने का यह सही समय है?

आर्थिक विकास दर में कमी की जो बात कही जा रही है, कई उद्यमी उसमें भी अवसर देख रहे हैं। दरअसल, उद्यमी को बने रहने के लिए दीर्घकालिक विजन के साथ काम करना होता है, हमने 2007-08 की मंदी भी देखी है। उस दौर में चुनौतियों के बावजूद कई कंपनियों ने खुद को स्थापित किया। मैं हमेशा से मानता आया हूं कि भारत संभावनाओं से भरा हुआ है। हमारी प्रगति को रोक पाना असंभव है। सौभाग्य की बात है कि मुझे यहां काम करने का अवसर मिल रहा है और यकीनन यहां सभी के लिए काफी अवसर हैं।

बीते वित्त वर्ष हेवल्स का राजस्व 21% बढ़ा, कंपनी को कहां पहुंचाने का लक्ष्य है?

देखिए, यह कहना आसान होता है कि एक वर्ष में राजस्व काफी बढ़ा, लेकिन यह सब रातों-रात या एक साल में नहीं होता। थोड़े समय में मिली सफलता, थोड़े ही समय में खत्म भी हो जाती है। एक कंपनी या उद्यमी की असली सफलता के पीछे 20-25 वर्षों की मेहनत होती। हम कई बार असफल होते हैं, उनसे सीख लेते हैं। आगे भी यही प्रयास होगा।

पांच से 15 वर्षों में कौन-कौन सी तकनीक उद्योग पर प्रभाव डालेंगी, आप इस दिशा में क्या तैयारियां कर रहे हैं?

दुनिया और तकनीक तेजी से बदल रही हैं। इनके प्रति उद्यमियों को सजग रहना चाहिए। हमारे लिए इस समय इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) पर काम करना सबसे जरूरी हो गया है। अगले तीन वर्षों में हम देखेंगे कि मोबाइल फोन में मौजूद एक एप्लीकेशन हमारे टीवी, फ्रिज, वॉशिंग मशीन, लाइट, गीजर, एसी, यानी सभी उपकरणों को नियंत्रित कर रहा है। हमने इस दिशा में काम शुरू किया है। कुछ उत्पाद बाजार में उतारे हैं।

आपके पिता ने शून्य से शुरुआत की, ऐसा करने में एक उद्यमी के लिए क्या दिक्कतें आती हैं?

हमारी ही नहीं, कई उद्यमियों की कहानी लगभग जीरो कैपिटल से शुरू हुई। पूंजी, नाम, प्रतिष्ठा जुटाने के बीच सबसे बड़ी दिक्कत मूल्यों के पालन की होती है। यही आपकी परीक्षा भी होती है। इस पर आप खरे उतरते हैं तो सफल रहते हैं। मुझे लगता है कि मेरे पिता कीमत राय गुप्ता ने जिस तरह इन मूल्यों का पालन करते हुए अपने काम को बढ़ाया, उसी वजह हेवल्स इंडिया आज उस मुकाम पर पहुंची जहां आप देख रहे हैं।

भारतीय ग्राहकों के जेहन में जगह बनाना कितना मुश्किल है और आपने ऐसा क्या किया जिससे सफलता मिली?

भारतीय उपभोक्ताओं के मन में अंतरराष्ट्रीय कंपनियों के बीच अपनी पहचान बनाने के लिए अच्छी छवि और प्रतिष्ठा की जरूरत होती है। यह तभी बनते हैं, जब आप लोगों के विश्वास को हासिल कर पाते हैं। किसी कंपनी की पहचान बनने वाला ब्रांड होने के लिए भी यही सच है। हमें लगता है इसी में हमें सफलता मिली।

उद्यमी में कौन से गुण जरूर होने चाहिए? क्या जोखिम उठाने की आदत डाल लेनी चाहिए?

हर उद्यमी में दो गुण जरूर होने चाहिए, धैर्य और साहस। धैर्य उसे अपने मूल्यों और सही विजन में विश्वास रखना सिखाएगा। साहस जोखिम लेने में मदद करेगा। लेकिन मैं यह भी साफ कर दूं कि जोखिम कभी अंधेरे में रहकर नहीं लिया जाता। युवा और भावी उद्यमियों को सुझाव देना चाहूंगा कि जोखिम हमेशा नपा-तुला होता है। आपको पता होना चाहिए कि विफल होने पर कितना नुकसान होगा। नुकसान ऐसा न हो कि सब कुछ खत्म हो जाए।